शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी में आईटी उत्पाद : एक अध्ययन

जितेन्द्र जायसवाल (शोधार्थी)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे (निर्देशक)
महाराजा रणजीत सिंह कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल साईंसेस
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

इक्कीसवीं सदी सूचना क्रांति को समर्पित है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप संचार साधनों का उपयोग करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति समाज और संगठन स्वतंत्र है। संचार साधनों के कारण मनुष्य की पहुँच दिग्दिगंत तक हो गयी है। आईटी उत्पादों के सामने भाषाओं की विविधता चुनौती बनी हुई है। भारत जैसे विशाल देश में हिंदी भाषा एक वृहत्तर क्षेत्र में प्रयुक्त की जाती है। आईटी उत्पादों को शीघ्रता से अपनाने के बावजूद हिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रसार की गति धीमी है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत में मोबाइल फ़ोन की तेज़ी से बढ़ती संख्या को देखकर यदि यह कहा जाए कि अगली क्रांति मोबाइल से होगी, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश में मोबाइल फ़ोन की संख्या प्रति माह किसी छोटे-मोटे देश की पूरी जनसंख्या से ज्यादा बढ़ जाती है। सूचना क्रांति का जो स्वप्न कभी कंप्यूटर को लेकर देखा गया था, वह अंतत: स्मार्टफ़ोन के जरिए साकार होता नज़र आ रहा है।

हाई स्पीड इंटरनेट की गाँव-गाँव तक बढ़ती पहुँच और सस्ते होते डेटा प्लान और स्मार्टफ़ोन ने भारत को दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा इंटरनेट उपयोगकर्ता बना दिया है। हाल ही में जारी गूगल-केपीएमजी की रिपोर्ट के अनुसार भारत में अगले दस में से नौ नए इंटरनेट उपयोगकर्ता भाषाई होंगे अर्थात वे अपनी-अपनी भाषा में इंटरनेट का उपयोग करेंगे। रिपोर्ट के मुताबिक 2021 तक हिंदी के उपयोगकर्ता अंग्रेज़ी से ज्यादा हो जाएँगे।1

हिंदी भाषा के बढ़ते उपयोगकर्ताओं की शक्ति को सूचना प्रौद्योगिकी उत्पाद निर्माताओं ने भी समझा है तथा भाषाई बाज़ार का यह उभरता हिस्सा उनके लिए नई संभावनाएँ लेकर आया है। चूँकि अंग्रेज़ी का बाज़ार पहले ही पूरी तरह भर चुका है और वहाँ कारोबार फैलाने की संभावनाएँ काफी कम हैं। इन कंपनियों का सारा ध्यान हिंदी उपयोगकर्ता वर्ग को आकर्षित करने में लगा हुआ है। उन्हें साधने के लिए वे अपने उत्पादों के हिंदी संस्करण प्रस्तुत कर रही हैं। गूगल के भारत प्रमुख राजन आनंदन के अनुसार अगर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपयोगकर्ताओं को उनकी भाषा में सामग्री नहीं दी गई, तो उत्पाद बाज़ार से बाहर हो जाएगा।2

हिंदी के आईटी उत्पाद

हिंदी भाषी इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का इतना बड़ा बाजार होने के बावजूद भी हिंदी के आईटी उत्पाद उपयोगकर्ताओं के बीच लोकप्रिय नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे बहुत कम ही उपयोगकर्ता हैं जिन्होंने इसे बिना किसी मजबूरी के अपनाया है। इन उत्पादों के अपेक्षित सफल न हो पाने के पीछे कई कारण हैं। शुरुआती दिनों में हार्डवेयर और सॉफ़्टवेयर का हिंदी के अनुकूल ना होना एक बड़ी बाधा थी। समय बदलने के साथ आज ऐसे सभी सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर बाज़ार से लगभग बाहर हो गए हैं जो हिंदी में काम न कर पाएँ। हिंदी अपनाने में आज जो सबसे बड़ी बाधाएँ बची हैं, उन्हें मुख्यतः तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है:

तकनीकी बाधा

चूँकि अधिकांश हिंदी भाषी क्षेत्र देश के गैर-शहरी इलाकों में हैं। उनमें तकनीकी ज्ञान की कमी होना स्वाभाविक है। कई लोग अपने मोबाइल डिवाइस या कंप्यूटर का उपयोग हिंदी में केवल इसलिए नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें भाषा बदलने का तरीका ही पता नहीं होता। कई बार मोबाइल या कंप्यूटर बेचने वाले खुद उन्हें ऐसे डिवाइस चालू करके दे देते हैं, जिनमें अंग्रेज़ी भाषा सेट की हुई रहती है। आजकल लगभग सभी मोबाइल और कंप्यूटर की भाषा को हिंदी में बदलने का विकल्प दिया जाने लगा है लेकिन जागरुकता की कमी से ऐसा संभव नहीं हो पा रहा है।

इसके पीछे सरकार की स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने की नीति भी कुछ हद तक ज़िम्मेदार है। कुछ समय पहले भारत में बिकने वाले मोबाइल फ़ोन में स्थानीय भाषाओं का समर्थन अनिवार्य कर दिया गया, लेकिन पहले ऐसा नहीं था।3 अगर देश में बिकने वाले कंप्यूटर और मोबाइल उत्पादों में पहले से स्थानीय भाषाओं का विकल्प देना अनिवार्य कर दिया गया होता, तो आज स्थिति अलग होती। इसके अलावा, भारत में बिकने वाले मोबाइल और कंप्यूटर में डिफ़ॉल्ट भाषा हिंदी होनी चाहिए, जिससे उपयोगकर्ताओं को हिंदी उपयोग करने में सुविधा होगी।

कमोबेश यही स्थिति की-बोर्ड के साथ भी है। कंप्यूटर या मोबाइल पर हिंदी में टाइप करना कठिन है, क्योंकि हमारी लिपि में संयुक्त अक्षर और मात्राएँ हैं, जिन्हें लिखने के लिए कई कुंजियों की आवश्यकता होती है जबकि अंग्रेज़ी की-बोर्ड पर कम कुंजियाँ होती हैं। कंप्यूटर या मोबाइल के साथ आजकल हिंदी में लिखने के लिए की-बोर्ड दिया जाने लगा है, लेकिन वह भी डिफ़ॉल्ट सेट नहीं होता। उसे सेटिंग में जाकर सक्षम करने की आवश्यकता होती है, जो कम पढ़े-लिखे हिंदी भाषियों द्वारा करना मुश्किल है। इसके अलावा गूगल इंडिक इनपुट जैसे लिखने में आसान की-बोर्ड आज भी पैकेज के साथ बंडल होकर नहीं आते और उन्हें अलग से डाउनलोड करना पड़ता है।4

भाषागत बाधा

हिंदी के उपयोग में तकनीकी बाधा से बड़ी बाधा भाषा की नज़र आती है। बहुतायत में हिंदी भाषी भी कंप्यूटर और मोबाइल का उपयोग अंग्रेज़ी में ही करते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि वे अंग्रेज़ी में अधिक सहज हैं, क्योंकि अगर ऐसा होता तो बॉलीवुड की फिल्में और हिंदी में डब किए कार्टून और डिस्कवरी जैसे ज्ञानवर्द्धक चैनल नहीं चल रहे होते। इसका प्रमुख कारण यह है कि फिलहाल मोबाइल और कंप्यूटर में प्रस्तुत

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी की हालत ऐसी नहीं है कि उन्हें अंग्रेजी से अधिक सहज तरीके से समझा जा सके। यदि उपयोगकर्ता अपने मोबाइल या कंप्यूटर की भाषा को हिंदी में बदल भी ले, तो उसे शब्दों या वाक्यों का अर्थ निकालने में खासी मशक्कत करनी पड़ती है।

शब्दावली की बाधा

कंप्यूटर या मोबाइल में उपयोग होने वाली हिंदी शब्दावली में कोई एकरूपता नहीं है। हर आईटी उत्पाद निर्माता की अलग-अलग शब्दावली है। अंग्रेजी में File आपको हर जगह File ही लिखा मिलेगा लेकिन हिंदी में कहीं वह फ़ाइल है तो कहीं संचिका। अंग्रेजी का Map कहीं मानचित्र है, कहीं मैप तो कहीं नक्शा।5 शब्दावली की यह विविधरूपता उपयोगकर्ताओं के लिए एक पहेली की तरह होता है, जिसे हल करने से अच्छा वह अंग्रेजी का उपयोग करना समझता है।

इसका प्रमुख कारण भारत सरकार के शब्दावली आयोग के सूचना प्रौद्योगिकी शब्दकोश की विफलता है। आयोग ने सूचनाप्रौद्योगिकी के स्थानीयकरण में मदद करने के लिए शब्दकोश तो बनाया, लेकिन इसके निर्माण के समय उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी जैसे प्रतिदिन बदलने वाले विषय और सामाजिक विज्ञान जैसे परंपरागत विषय में कोई भेद नहीं किया। नतीजा यह हुआ कि शब्दावली में ऐसे शब्द आए जो कि या तो सामयिक नहीं थे या ऐसे थे जिन्हें उपयोग करने में आमतौर पर कठिनाई होती है। शब्दावली की विफलता, आयोग का इसे न समझ पाने और सरकार की ओर से उसके अनिवार्य पालन के दिशा-निर्देश न होने के कारण आईटी उत्पाद निर्माताओं ने अपनी-अपनी उत्पाद नीतियों के अनुसार शब्दावली बनाना शुरू कर दी जिसमें निम्न प्रकार कुछ सिद्धांत सामने आए :

पूर्णतः हिंदी या देशी शब्द : मोज़िला जैसे कई संगठनों ने आईटी के ठेठ शब्दों को यथासंभव हिंदी में बदलने और नए अंग्रेज़ी शब्दों के लिए नए हिंदी शब्द (जैसे चटकाएँ) बनाने की कोशिश की।6 इसी दिशा में हिंदी के ब्लॉगरों ने कुछ योगदान दिया और चिट्ठाकारिता, मूषक, जालस्थान जैसे शब्दचलन में लाने की कोशिश की।7

परिवर्धित सरकारी हिंदी : माइक्रोसॉफ़्ट जैसी कई कंपनियों ने सरकारी हिंदी को अंग्रेज़ी शब्दों के साथ प्रस्तुत करके शब्दावली का एक बेहतर रूप प्रस्तुत किया, जिसे आज कई नए उत्पाद स्थानीयकरण में दिशा-निर्देश के रूप में देखा जाता है। नई हिंदी शब्दावली के निर्माण की दिशा में इसे पहला कदम माना जा सकता है।8

हिंग्लिश शब्दावली : अडोब जैसी डीटीपी सॉफ़्टवेयर उत्पाद निर्माता कंपनियों ने हिंदी शब्द बहुत कम उपयोग करते हुए अधिक से अधिक अंग्रेजी शब्दों को हिंदी में लिखते हुए एक नए तरह की शब्दावली पैटर्न पर काम किया। इस शब्दावली में अधिकांश अंग्रेजी शब्दों को जस का तस नागरी लिपि में हिंदी में लिख दिया गया।

मिश्रित शब्दावली : गूगल जैसी कंपनियों ने शास्त्रीय और सामयिक हिंदी, उर्दू-अरबी-फारसी, तथा अंग्रेजी को मिला-जुला कर एक नए तरह की शब्दावली का निर्माण किया। चूँकि उपयोगकर्ता लगभग इन सभी कंपनियों के उत्पादों का उपयोग करता है और उसे इस बात से कोई मतलब नहीं होता कि उसे किसने बनाया है और उसकी शब्दावली का पैटर्न क्या है। उपयोगकर्ता के कंप्यूटर या मोबाइल पर ये सभी प्रकार के उत्पाद होते हैं और अलग-अलग शब्दावलियों का उपयोग उनके लिए अच्छी परेशानी पैदा करता है। ऐसा नहीं है कि अंग्रेजी

उत्पादों में ऐसी असमानताएँ नहीं होतीं, लेकिन एक मूलभूत स्तर की समानता देखी जाती है।

वाक्य स्वरूप बाधा

दूसरी भाषागत बड़ी समस्या है हिंदी उत्पादों में वाक्यों का अटपटा स्वरूप। इनकी भाषा वैसी नहीं होती जैसी आम हिंदी भाषी बोलता या लिखता है। इसका मूल कारण यह है कि हिंदी के ये उत्पाद मूलत: अंग्रेज़ी उत्पादों के अनुवाद या स्थानीयकरण की मदद से तैयार किए जाते हैं। ये अनुवाद कुशल-अकुशल दोनों तरह के अनुवादकों द्वारा मिलकर किए जाते हैं। इस तरह तैयार किए गए उत्पादों में कई तरह के वाक्य विन्यास देखे जाते हैं। इनमें से अधिकांश वाक्य विन्यास अंग्रेज़ी की छाप लिए हुए तथा अव्यवस्थित स्वरूप में होते हैं जिसके कारण उन्हें एक बार में सहज रूप से पढ़ और समझ पाना मुश्किल होता है।9

सरकारी नीति और नियंत्रण

हिंदी आईटी उत्पादों का अपेक्षित सफल और लोकप्रिय न हो पाने के पीछे राजभाषा के संबंध में नीतियों का अपर्याप्त होना भी है। हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने और उत्पादों में एकरूपता रखने के लिए सरकार की ओर से दिशा-निर्देशों का अभाव है। दुनिया के कई देशों के बाजार में अपने आईटी उत्पाद उतारने से पहले बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए स्थानीय भाषा में उपयोग कर पाने की सुविधा देना अनिवार्य है। भारत में शुरुआत से ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं रही, इसलिए इस दिशा में मानकीकरण नहीं हो पाया। कुछ समय पहले मोबाइल उपकरणों में भारतीय भाषाओं का समर्थन अनिवार्य कर दिया गया है, लेकिन कंप्यूटर और अन्य सॉफ़्टवेयर के लिए आज भी यह अनिवार्यता नहीं है। यदि देश की सरकार ही अपनी भाषाओं को गंभीरता से नहीं लेगी, तो विदेशी कंपनियों से ऐसी आशा नहीं की जा सकती।

यदि शब्दावली आयोग के कंप्यूटर शब्दकोश की प्रासंगिकता का विषय अलग रख भी दिया जाए, तो सरकार की ओर से उसका उपयोग करने की कोई अनिवार्यता नहीं है। न ही ऐसी कोई संस्था है जो हिंदी या किसी अन्य भारतीय भाषा में प्रस्तुत किए जा रहे आईटी उत्पादों में भाषा की गुणवत्ता और एकरूपता सुनिश्चित करे। इसके अलावा आईटी उत्पादों के स्थानीयकरण का कोई प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी उपलब्ध नहीं है और न ही ऐसे अनुवाद के लिए किसी प्रमाणपत्र की अनिवार्यता है। अनुवाद के अधिकांश पाठ्यक्रमों का स्वरूप पुराना है जो वर्तमान तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता।

निष्कर्ष

भारत के हर कोने में पहुँचते इंटरनेट और मोबाइल से हिंदी के आईटी उत्पादों की माँग तेज़ी से बढ़ रही है। बाज़ार में अत्यधिक माँग होते हुए भी हिंदी आईटी उत्पाद अपेक्षित सफल नहीं हो पाए हैं। इसका एक प्रमुख कारण हिंदी उत्पादों की भाषा का स्तरीय न होना है। हिंदी भाषी चाहते हैं कि वे अपने कंप्यूटर और मोबाइल को हिंदी में उपयोग करें, लेकिन ऐसा करते समय उन्हें भाषा की असहजता का सामना करना पड़ता है।

गहराई से देखने पर पता चलता है कि इस अप्राकृतिक और अनेकरूप भाषा का मूल स्रोत वे अनुवादक हैं जो इन उत्पादों को अंग्रेजी से हिंदी में बदलने का काम करते हैं। इस प्रकार के अनुवादकों की योग्यता और गुणवत्ता मापने का कोई उपयुक्त तरीका न होने के कारण कुशल-अकुशल सभी तरह के अनुवादक अपना योगदान करते रहते हैं। एक प्रमुख कारण यह भी है कि

अधिकांश बड़ी आईटी कंपनियों के लिए ऐसे अनुवाद कार्य विदेशी अनुवाद एजेंसियों के माध्यम से करवाए जाते हैं जिन्हें स्थानीय भाषा की कोई खास जानकारी नहीं होती। परिणाम यह होता है कि बड़ा निवेश करने के बावजूद भी अनुवाद में भाषा की गुणवत्ता सही नहीं रहती। अनुवादक आईटी उत्पादों का बेहतर स्थानीयकरण कर पाएँ, इसके लिए अनुवाद पाठ्यक्रमों में बदलाव करने की आवश्यकता है। पुराने और परंपरागत अनुवाद पाठ्यक्रमों को बदलकर उनमें तकनीकी अनुवाद विषयक सामग्री शामिल किए जाने की आवश्यकता है, ताकि भावी अनुवादक इस विषय क्षेत्र को अच्छे से समझ पाएँ। आईटी की शब्दावली को बदलकर उसमें प्रचलित शब्द शामिल किए जाने चाहिए और उनका पालन किया जाना अनिवार्य किया जाना चाहिए। भारतीय भाषाओं के स्थानीयकरण की निगरानी के लिए राजभाषा आयोग के अंतर्गत एक समिति बनाई जानी चाहिए जो उत्पादों की भाषा की गुणवत्ता और मानकता सुनिश्चित करे।

सन्दर्भ

1 Indian Languages - Defining India's Internet, A Study by KPMG in India and Google, April 2017

2 https://phys.org/news/2014-11-google-aims-mn-indian-local.html

3http://meity.gov.in/writereaddata/files/Indian%20Language%20Support.pdf

4 हिंदी कीबोर्ड का कनफ्यूजन जितेंद्र जायसवाल, गर्भनाल, दिसंबर 2015

5 सही किसे मानें - दृष्य, दृश्य या देखें ?,http://raviratlami.blogspot.com/2007/03/selecting-best-hindi-words.html

6 https://github.com/mozilla-l10n/styleguides/tree/master/hi-IN

7 http://epandit.shrish.in/174/hindi-translation-of-tech-words/

8 https://www.microsoft.com/en-us/language/Terminology

9http://anuvaadjagat.blogspot.com/2015/09/blog-post.html